पीएच० डी० शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

पीएच० डी० शोध प्रबन्ध का विषय

मेहरून्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में आंचलिकता

शोध निर्देषक

प्रोफेसर श्रीराम शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
तथा
पूर्व अधिष्ठाता भाषा संकाय
हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय
समरहिल, षिमला–171005

शोधकर्त्री

बविता
हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय
समरहिल, षिमला–171005

हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय
समरहिल, षिमला–171005

साहित्य का अर्थ ‘हित के साथ होने’ का भाव है। साहित्य समाज के प्रति हमारे विचारों,भावों एवं अर्थों की षाब्दिक अभिव्यक्ति है, जो कि हमारे किसी प्रकार के हित का साधन बनने के लिए संरक्षणीय होते हैं। मनुष्य में जन्म से ही अपने मनोभावों को प्रकट करने की अभिव्यक्ति पाई जाती है। अभिव्यक्ति का यह सुख सबसे बड़ा सुख है। भाषा के निर्माण की प्रक्रिया के साथ ही मनुष्य ने अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए साहित्य सृजन प्रारम्भ किया।

साहित्य और साहित्यकार दोनों ही अपने युग के समाज की उपज होते हैं। साहित्य का सम्बन्ध मानवीय भावनाओं एवं विचारों से होता है। साहित्यकार अपनी कृतियों में न केवल अपने भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति करता है बल्कि वह अपने पाठकों के भाव जगत और विचार जगत को भी प्रभावित करता है। साहित्य ने तटस्थ एवं निर्वैयक्तिक दृष्टि से समाज की ज्वलन्त समस्याओं,परिवर्तनषीलता के सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्वों एवं मनुष्य की विकृतियों,विषेषताओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इस प्रयास में सभी विधाओं ने समय और संदर्भ के अनुसार अपनी–अपनी भूमिका निभाई है।

आधुनिक काल हिन्दी साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इस काल से पूर्व हिन्दी साहित्य की रचना केवल पद्य के रूप में ही होती रही। लेकिन उन्नीसवीं षताब्दी में साहित्य में आए परिवर्तनों के परिणामस्वरूप हिन्दी साहित्य जगत में गद्य का विकास हुआ, जिसके अन्तर्गत कहानी,उपन्यास,निबन्ध,नाटक,रिपोर्ताज,रेखाचित्र,संस्मरण आदि विधायें उभर कर सामने आई हैं।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य जगत में कथा साहित्य का विषेष स्थान है। विचारों की अभिव्यक्ति और जीव–जगत की वास्तविकता जितनी व्यापकता से कथा साहित्य में चित्रित की जा सकती है, उतनी साहित्य की अन्य विधा में नहीं। साहित्य जगत में कथा साहित्य सभी विधाओं की अपेक्षा लोकप्रिय तथा सषक्त विधा है, जिसका स्थान न सिर्फ हिन्दी में बल्कि अन्य सभी भाषाओं में निर्विवाद रूप से सर्वोपरि है। कथा साहित्य में मानव के सम्पूर्ण जीवन के चरित्र की गुंजाइष रहती

है। यही कारण है कि गद्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा कथा साहित्य समाज में अधिक वांछित है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पष्चात् राष्ट्र की यह उपलब्धि रही कि नारी अनायास ही वैचारिक धरातल पर चेतन हो गयी। षिक्षित एवं आत्मनिर्भर होकर वह पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ने लगी। परिणामस्वरूप लेखन के क्षेत्र में भी महिला कलाकारों की लम्बी, सषक्त श्रृंखला निर्मित होती चली गई। इन लेखिकाओं ने अपने अनुभवों को प्रामाणिक बनाया। ये निरन्तर इस क्षेत्र में निष्ठा, लगन, दृढ़ता और एकाग्र मन से जुड़ी हुई हैं।

आधुनिक कथा साहित्य में जिन महिला लेखिकाओं का नाम बड़े गर्व से लिया जाता है, उनमें मेहरून्निसा परवेज़ का विषिष्ट स्थान रहा है। मेहरून्निसा परवेज़ अत्यंत संवेदनषील और प्रगतिषील विचारों की लेखिका हैं।मेहरून्निसा परवेज़ ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में साहित्य सृजन किया है। कहानी, उपन्यास तथा अन्य साहित्य के साथ–साथ 'समर लोक' पत्रिका का भी सम्पादन करती रही हैं। इनके साहित्य का मुख्य उद्देष्य नारी की समस्याओं पर प्रकाष डालना रहा है। इनके कथा साहित्य में बस्तर एवं वहां के आदिवासियों का विस्तृत विवेचनहुआ है। इन्होंने टूटते जीवन मूल्य और आर्थिक विषमता को भी अपना विषय बनाया है। इन्होंने हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई धर्म का गहन अध्ययन किया है, जिसका प्रभाव इनके कथा साहित्य में दृष्टिगोचर होता है। मेहरून्निसा परवेज़साहित्य सृजन के साथ–साथ समाजसेवा का भी कार्य करती रही हैं। इन्होंने समकालीन सामाजिकता और मानसिकता को बड़ी सूक्ष्मता से समझा और अपने लेखन को यथार्थ स्वर दिया है।

विषय चयन

हिन्दी साहित्य की छात्रा होने के नाते कहानी और उपन्यास के प्रति मेरा रूझान किषोरावस्था से ही रहा है। मेहरून्निसा परवेज़जो स्वातंत्र्योत्तर कथाकारों में प्रमुख स्थान रखती हैं, मैंने उनके 'कोरज़ा' उपन्यास और 'मेरी बस्तर की कहानियां' कहानी संग्रह पढ़ा, जो बस्तर के आंचलिक परिवेष पर लिखे गए हैं। इनको पढ़कर मैं काफी प्रभावित हुई, मुझे इनके साहित्य को विस्तृत रूप से जानने की इच्छा हुई।

मेहरून्निसा परवेज़के सम्पूर्ण कथा साहित्य का अध्ययन करने के बाद मैंने पाया कि उन्होंने लगभग अपने सम्पूर्ण कथा साहित्य में बस्तर क्षेत्र का वर्णन किया है। अपने शोध निर्देषक परम श्रद्धेय प्रोफेसर श्रीराम शर्मा से इस बारे में विचार–विमर्ष करने के पष्चात् मैंने'मेहरून्निसा परवेज़के कथा साहित्य में आंचलिकताô शोध विषय चुनने का निर्णय लिया।

विषय का महत्त्व एवं स्पष्टीकरण

आंचलिकता आधुनिक कथा साहित्य की महत्त्वपूर्ण एवं नवीन उपलब्धि है। आंचलिक कथा साहित्य में एक विषिष्ट समाज निहित रहता है। इसमें व्यक्ति विषेष की महत्ता उतनी नहीं होती जितनी स्थान विषेष की। आंचलिक कथा साहित्य किसी विषेष भू–भाग अथवा अंचल की वास्तविकताओं को उपस्थित करता है। वह कथा साहित्य आंचलिक कहलाता है, जिसमें किसी क्षेत्र विषेष के जीवन,रहन–सहन, रीति–रिवाज, रूढ़ियां,अंधविष्वास,लोककथाओं आदि का चित्रण मिलता है।

मेहरून्निसा परवेज़ने इसी आंचलिकता को अपने कथा साहित्य का आधार बनाया और युग की विभिन्न समस्याओं को आंचलिकता के माध्यम से विष्लेषित करने का प्रयास किया।इन्होंने आंचलिक जीवन के समग्र पहलुओं को अपने साहित्य में अत्यंत सहजता और पूर्णता के साथ चित्रित किया है। इनके साहित्य में बस्तर क्षेत्र के जन–जीवन का समग्र चित्रण हुआ है। इनके कथा साहित्य में बस्तर की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक स्थिति का चित्रण मिलता है।

'मेहरून्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में आंचलिकताô विषय पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है, जिससे विषय की नवीनता के साथ–साथ इसकी महत्ता स्वतः ही स्पष्ट हो जाती है। इस शोध प्रबन्ध का मुख्य ध्येय मेहरून्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में आए उस अंचल विषेष के जीवन को उद्घाटित करना रहेगा, जिसका जीवन वहां के पर्वों, उत्सवों, परम्पराओं, विष्वासों, व्यथा के अवसरों, गीतों, संघर्षों, प्रकृति के रंग–रूपों एवं पुराने–नए जीवन मूल्यों से लिपटा हुआ है।

सम्बद्ध साहित्य का सर्वेक्षण

मेहरून्निसा परवेज़के कथा साहित्य पर विविध शोधपरक एवं आलोचनात्मक कार्य हुए हैं। इन सभी कार्यों का विवरण प्रस्तुत है।

हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय में पीएच.डी. उपाधि हेतु विजय कुमारी ने 'षिवानी और मृदुला गर्ग के औपन्यासिक नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन' विषय परशोध प्रबन्ध लिखाहै। इस शोध प्रबन्ध में 'स्वतंत्र नारियां' शीर्षक के अंतर्गत मेहरून्निसा परवेज़के 'कोरज़ा' और 'स्वच्छन्द प्रेम और अन्तर्जातीय विवाह की समस्या' शीर्षक के अंतर्गत 'अकेला पलाष' उपन्यास की समीक्षा की गई है।

उत्तर महाराष्ट्र विष्वविद्यालय जलगांव में आर.एस.जगताप ने पीएच.डी. की उपाधि हेतु 'मेहरून्निसा परवेज़के कथा साहित्य में नारी' विषय पर शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया। इस शोध प्रबन्ध में मेहरून्निसा परवेज़के कथा साहित्य में नारी के विविध रूपों की चर्चा की गई है।

उत्तर महाराष्ट्र विष्वविद्यालय जलगांव में अनीता जाधव ने पीएच.डी. उपाधि हेतु 'मेहरून्निसा परवेज़की कहानियां : एक अध्ययन' विषय पर शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया। इस शोध प्रबन्ध में विविध शीर्षकों के अंतर्गत मेहरून्निसा परवेज़की कहानियों पर विस्तृत विवेचन–विष्लेषण किया गया है।

इलाहाबाद विष्वविद्यालय में कीर्ति मिश्रा ने पीएच.डी. उपाधि हेतु 'महिला उपन्यास लेखन एवं स्त्री विमर्ष' विषय पर शोध प्रबन्ध लिखा है। इस शोध प्रबन्ध में 'प्रमुख महिला उपन्यासकारों की औपन्यासिक कृतियों में स्त्री विमर्ष का मूल्यांकन' शीर्षक के अंतर्गत मेहरून्निसा परवेज़के 'अकेला पलाष' और 'आंखों की दहलीज़' उपन्यास की समीक्षा की गई है।

पटना विष्वविद्यालय में किषोर सिन्हा ने 'हिन्दी की आंचलिक कहानी परम्परा और प्रयोग' विषय पर पीएच.डी की उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध लिखा है, जिसमें 'आंचलिक कहानी की रचना–प्रक्रिया एवं रूप–विधायक तत्व' शीर्षक के अंतर्गत मेहरून्निसा परवेज़की 'कानीबाट' और 'गुरूमंत्र' कहानियों की समीक्षा आंचलिकता के संदर्भ में हुई है।

दीपिका रानी ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी कहानी और मुस्लिम समाज' में 'मेहरून्निसा परवेज़की कहानियों में मुस्लिम संस्कृति' शीर्षक के अंतर्गत मुस्लिम संस्कृति को प्रस्तुत करती मेहरुन्निसा परवेज़ की विभिन्न कहानियों पर समीक्षात्मक विवेचन प्रस्तुत किया है।

इन्दु वीरेन्द्रा ने अपनी पुस्तक 'साठोत्तरी कहानी में परिवार' में मेहरून्निसा परवेज़ की कहानियों 'आदम और हव्वा' तथा 'फाल्गुनी' पर 'पीढ़ियों का संघर्ष' शीर्षक से आलोचनात्मक विवरण प्रस्तुत किया है।

हरिषंकर दुबे ने अपनी पुस्तक 'महिला उपन्यासकारों की नारी : प्रगति एवं पीड़ा के आयाम' में मेहरुन्निसा परवेज़ के 'कोरज़ा' तथा 'अकेला पलाष' उपन्यास की समीक्षा 'स्वाधीन भारत में नारी पीड़ा के पहाड़ और चुनौतियां' शीर्षक के अंतर्गत की है।

प्रतीप श्रीधर ने अपनी पुस्तक 'स्त्री चिन्तन की अन्तर्धाराएं और समकालीन हिन्दी उपन्यास' में मेहरुन्निसा परवेज़ के उपन्यास 'अकेला पलाष' की समीक्षा 'मूल्यांकन–खंड' शीर्षक के अंतर्गत की है।

मंजुला राणा ने अपनी पुस्तक 'दसवें दषक के हिन्दी उपन्यासों में साम्प्रदायिक सौहार्द' में मेहरून्निसा परवेज़के 'अकेला पलाष' उपन्यास की समीक्षा साम्प्रदायिक संदर्भ में की है।

सौ० मंगल कप्पीकेरे ने अपनी पुस्तक 'साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी' मेंमेहरून्निसा परवेज़की कहानियों 'क्यों नहीं' और 'सोने का बेसर' की समीक्षा विविध शीर्षकों के अंतर्गत की है। इसमें मेहरून्निसा परवेज़की कहानियों में नारी पात्रों की विषेषताओं का वर्णन है।

रामचन्द्र तिवारी ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी का गद्य साहित्य' में मेहरून्निसा परवेज़ के उपन्यास और कहानियों पर समीक्षात्मक विवेचन प्रस्तुत किया है।

दीपा हावगीराज मैलारे ने अपनी पुस्तक 'साठोत्तरी हिन्दी कहानी में पुरुष चरित्र' में मेहरून्निसा परवेज़ के दो कहानी संग्रह 'आदम और हव्वा' और 'सोने का बेसर' पर समीक्षात्मक विवेचन किया है। इस पुस्तक में स्पष्ट किया गया है कि

मेहरून्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में पुरुष पात्रों की तुलना में नारी पात्र अधिक सषक्त हैं।

विषय परिसीमन

मेहरून्निसा परवेज़का समग्र साहित्य पर्याप्त विस्तृत और समृद्ध है। षोध प्रबन्ध की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए मैंने 'मेहरून्निसा परवेज़के कथा साहित्य में आंचलिक परिवेष' विषय पर कार्य करने का संकल्प किया है। कथा साहित्य के विस्तार को देखते हुएतथा शोध प्रबन्ध की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में मेहरून्निसा परवेज़ के व्यक्तित्व, कृतित्व, आंचलिकता का सैद्धान्तिक पक्ष, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्राकृतिक एवं षिल्पगत विष्लेषण को विवेचित–विष्लेषित करने का प्रयास किया जाएगा।

प्रबन्ध योजना

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को अध्ययन की सुविधा हेतु सात अध्यायों में विभाजित किया गया है। अध्यायों को शीर्षकों एवं उपषीर्षकों में विभाजित किया है। शोध प्रबन्ध के आरम्भ में भूमिका और अन्त में उपसंहार का समायोजन रहेगा।

पहला अध्याय 'मेहरून्निसा परवेज़ का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' है। इस अध्याय को व्यक्तित्व और कृतित्व दो शीर्षकों में बांटा गया है। व्यक्तित्व के अन्तर्गत जन्म, षिक्षा, पारिवारिक परिवेष, वैवाहिक जीवन, साहित्य सृजन की प्रेरणा और सामाजिक कार्य एवं पुरस्कार उपषीर्षक हैं। कृतित्व के अन्तर्गत कहानी, उपन्यास, संस्मरण, अन्य साहित्यिक विधाएं तथा मेहरून्निसा परवेज़ औरआंचलिक कथाकार उपषीर्षक हैं।

दूसरा अध्याय 'आंचलिकता : का सैद्धान्तिक विवेचन' है। इस अध्याय में आंचलिकता : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप, आंचलिकता के विधायक तत्व, आंचलिकता के लोकतत्व, आंचलिकता की विषेषताएं तथा हिन्दी कथा साहित्य में आंचलिकता का उद्‌भव और विकास मुख्य शीर्षक हैं। लोक संस्कृति, प्राकृतिक परिवेष, परिवेषजनित पिछड़ापन, परिवेषजनित समस्याएं, जन जागरण की दिषाएं, लोकविष्वास, रीति–रिवाज और प्रथाएं, लोक साहित्य, विषिष्ट कथावस्तु संरचना,

नायक का अभाव और बहुपात्रता, प्रगाढ़ स्थानीय रंग, भाषा शैली की विषिष्टता, विस्मय एवं कौतुहल की भावना, विविध स्थिति चित्रण, रेणु–पूर्व युग, रेणु–युग, रेणु–परवर्ती युग उपषीर्षक हैं।

तीसरा अध्याय 'मेहरुन्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में आंचलिकता : सामाजिक संदर्भ' है। समाज : अर्थ, परिभाषा, समाज एवं साहित्य, अंचल विषेष के जन–जीवन का चित्रण, समाज एवं नारी उत्पीड़न, सामाजिक समस्याएं इसअध्याय के मुख्य शीर्षक हैं। पारिवारिक जीवन एवं आपसी सम्बन्ध, ग्रामीण जीवन एवं विविध व्यवसाय, ग्रामीण जीवन एवं संघर्ष, जातिवादी सामाजिक संरचना, ग्रामीण जीवन एवं लोकविष्वास, पारिवारिक शोषण, उच्चवर्ग द्वारा शोषण, पर्दा प्रथा, बांझपन की पीड़ा, विधवा समस्या, बाह्य लोगों द्वारा शोषण, पारिवारिक विघटन, शैक्षणिक पिछड़ापन, प्रेम विवाह एवं सामाजिक अवरोध, विविध वैवाहिक समस्याएं, सामन्तवादी व्यवस्था एवं शोषण और साम्प्रदायिक द्वेष इस अध्याय के उपषीर्षक हैं।

चौथा अध्याय 'मेहरून्निसा परवेज़के कथा साहित्य में आंचलिकता : सांस्कृतिक संदर्भ' है। इस अधयाय के अन्तर्गत संस्कृति : अर्थ, परिभाषा, संस्कृति का आन्तरिक पक्ष, संस्कृति का बाह्य पक्ष, त्योहार एवं मेले, मनोरंजन के विविध साधन, लोक–कथाएं तथा लोक–मान्यताएं, क्षेत्रीय रूढ़ि परम्परा, धार्मिक जीवन मुख्य शीर्षक हैं। उपषीर्षक में करुणा, दया, त्याग, सहनषीलता, परोपकार, निवास, भोजन, वस्त्र विन्यास, विविध संस्कार, तारा त्योहार, दियारी त्योहार, दषहरे का रथोत्सव, भगौरिया हाट, नारायणपुर की मंडई, लोकगीत, लोकनृत्य, सिनेमा, विविध खेल, इतिहास सम्बन्धी कथाएं, धर्म सम्बन्धी कथाएं, विविध पक्षी सम्बन्धी कथाएं, मृत्यु और आत्मा से जुड़े विष्वास, रूढ़ि में महला एवं खेलावड़ी, परम्परा में गोदना गुदवाना, घोटुल गृह, धर्म के सकारात्मक पक्ष तथा नकारात्मक पक्ष हैं।

पाँचवाँ अध्याय 'मेहरून्निसा परवेज़के कथा साहित्य में आंचलिकता : आर्थिक और राजनीतिक संदर्भ' है। इस अध्याय में अर्थ : व्युत्पत्तिपरक अर्थ, परिभाषा, आर्थिक विपन्नता से उत्पन्न समस्याएं, आंचलिक जीवन और राजनीतिक सन्दर्भ मुख्य शीर्षक हैं। आर्थिक विषमता, निम्न वर्ग और शोषण, गरीबी और दरिद्रता, ऋणग्रस्तता, बंधुआ मजदूर, अर्थ एवं वेष्यावृत्ति, अर्थ एवं सम्बन्ध विघटन, राजनीति :

अर्थ एवं परिभाषा, राजनीतिक वातावरण इस अध्याय के उपषीर्षक हैं। राजनीतिक वातावरण उपषीर्षक के अन्तर्गत प्रजातन्त्र और पूंजीवाद, चुनाव और आरक्षण, राजनीतिक अज्ञानता, चुनावी वातावरण और हिंसा, राजनीतिक दाँवपेंच, राजनीति एवं जनता विरोध तथा भ्रष्ट न्याय व्यवस्था उपषीर्षकों का विष्लेषण किया जाएगा।

छठा अध्याय 'मेहरून्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में आंचलिकता : प्राकृतिक संदर्भ' है। इस अध्याय के अन्तर्गत प्रकृति : अर्थ,परिभाषा, बस्तर का भौगोलिक परिदृष्य, प्रकृति के विविध रूपों का चित्रण, खेत–खलिहान एवं विविध फसलें, फूल एवं पेड़–पौधे, जमीन–मिट्टी की गंध, प्रकृति एवं दैनिक स्वरूप चित्रण तथा प्रकृति के विभिन्न उपकरणों का वर्णन मुख्य शीर्षकहैं। नदियाँ, तालाब, कुएं, वन– सम्पदा, सूर्य एवं धूप, चाँद एवं चाँदनी तथा तारे इस अध्याय के उपषीर्षक हैं।

सातवाँ अध्याय 'मेहरून्निसा परवेज़ के कथा साहित्य का षिल्पगत विष्लेषण' है। इस अध्याय को षिल्प तथा षिल्प के विविध तत्व दो शीर्षकों में बांटा गया है।षिल्प शीर्षक के अन्तर्गत षिल्प का अर्थ, परिभाषा, षिल्प और साहित्य उपषीर्षक हैं। षिल्प के विविध तत्व शीर्षक में वस्तु, चरित्र–चित्रण, वातावरण निर्माण, भाषिक संरचना, शैली उपषीर्षक में रखे गए हैं।

अंत में उपसंहार प्रस्तुत किया जाएगा। इसमें शोध प्रबन्ध की उपलब्धि तथा सार आदि को विवेचित किया जाएगा। इसके पश्चात् संदर्भ ग्रंथ सूची में मूल ग्रंथ, सहायक ग्रंथ (हिन्दी एवं अंग्रेजी) हिन्दी–अंग्रेजी शब्दकोष तथा विष्वकोष तथा पत्र–पत्रिकाओं का विवरण दिया जाएगा।

मेहरून्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में आंचलिकता

पहला अध्याय

01 मेहरून्निसा परवेज़ : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 व्यक्तित्व

1.1.1 जन्म

1.1.2 षिक्षा

1.1.3 पारिवारिक परिवेष

1.1.4 वैवाहिक जीवन

1.1.5 साहित्य सृजन की प्रेरणा

1.1.6 सामाजिक कार्य एवं पुरस्कार

1.2 कृतित्व

1.2.1 कहानी

1.2.2 उपन्यास

1.2.3 संस्मरण

1.2.4 अन्य साहित्यिक विधाएं

1.2.5 मेहरुन्निसा परवेज़ और आंचलिक कथाकार

दूसरा अध्याय

02 आंचलिकता : सैद्धान्तिक विवेचन

2.1 आंचलिकता

2.1.1 अर्थ

2.1.2 परिभाषा

2.1.3 स्वरूप

2.2 आंचलिकता के विधायक तत्व

2.2.1 लोक संस्कृति

2.2.2 प्राकृतिक परिवेष

2.2.3 परिवेष जनित पिछड़ापन

2.2.4 परिवेष जनित समस्याएं

2.2.5 जन–जागरण की दिषाएं

2.3 आंचलिकता और लोक तत्व

2.3.1 लोक विष्वास

2.3.2 रीति–रिवाज और प्रथाएं

2.3.3 लोक साहित्य

2.4 आंचलिकता की विषेषताएं

2.4.1 विषिष्ट कथावस्तु संरचना

2.4.2 नायक अभाव एवं बहुपात्रता

2.4.3 प्रगाढ़ स्थानीय रंग

2.4.4 विस्मय एवं कौतुहल की भावना

2.4.5 भाषा, संवाद और शैली की विषिष्टता

2.4.6 विविध स्थिति चित्रण

2.5 हिन्दी कथा साहित्य में आंचलिकता का उद्‌भव और विकास

2.5.1 रेणु–पूर्व युग

2.5.2 रेणु– युग

2.5.3 रेणु–परवर्ती युग

तीसरा अध्याय

03 मेहरून्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में आंचलिकता : सामाजिक संदर्भ

3.1 समाज

3.1.1 अर्थ

3.1.2 परिभाषा

3.1.3 समाज एवं साहित्य

3.2 अंचल विषेष के जन–जीवन का चित्रण

3.2.1 पारिवारिक जीवन एवं आपसी सम्बन्ध

3.2.2 ग्रामीण जीवन एवं विविध व्यवसाय

3.2.3 ग्रामीण जीवन एवं संघर्ष

3.2.4 जातिवादी सामाजिक संरचना

3.2.5 ग्रामीण जीवन एवं लोक विष्वास

3.3 समाज एवं नारी उत्पीड़न

3.3.1 पारिवारिक शोषण

3.3.2 उच्चवर्ग द्वारा शोषण

3.3.3 पर्दा प्रथा

3.3.4 बांझपन की पीड़ा

3.3.5 विधवा समस्या

3.3.6 बाह्य लोगों द्वारा शोषण

3.4 सामाजिक समस्याएं

3.4.1 पारिवारिक विघटन

3.4.2 शैक्षणिक पिछड़ापन

3.4.3 प्रेम विवाह एवं सामाजिक अवरोध

3.4.4 विविध वैवाहिक समस्याएं

3.4.5 सामन्तवादी व्यवस्था एवं शोषण

3.4.6 साम्प्रदायिक द्वेष

चौथा अध्याय

04 मेहरून्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में आंचलिकता : सांस्कृतिक संदर्भ

4.1 संस्कृति

4.1.1 अर्थ

4.1.2 परिभाषा

4.2 संस्कृति का आन्तरिक पक्ष

4.2.1 करुणा

4.2.2 ममता

4.2.3 त्याग

4.2.4 सहनषीलता

4.2.5 परोपकार

4.3 संस्कृति का बाह्य पक्ष

4.3.1 निवास

4.3.2 भोजन

4.3.3 वस्त्र विन्यास

4.3.4 विविध संस्कार

4.4 त्योहार एवं मेले

4.4.1 तारा त्योहार

4.4.2 दियारी त्योहार

4.4.3 दषहरे का रथोत्सव

4.4.4 भगौहिया हाट

4.4.5 नारायणपुर की मंडई

4.5 मनोरंजन के विविध साधन

4.5.1 लोकगीत

4.5.2 लोकनृत्य

4.5.3 सिनेमा

4.5.4 विविध खेल

4.6 लोक–कथाएं तथा लोक–मान्यताएं

4.6.1 इतिहास सम्बन्धी कथाएं

4.6.2 धर्म सम्बन्धी कथाएं

4.6.3 विविध पक्षी सम्बन्धी कथाएं

4.6.4 मृत्यु और आत्मा से जुड़े विष्वास

4.7 क्षेत्रीय रूढ़ि–परम्परा

4.7.1 रूढ़ि

4.7.1.1 महला

4.7.1.2 ओढ़ना एवं खेलावड़ी

4.7.2 परम्परा

4.7.2.1 गोदना गुदवाना

4.7.2.2 घोटुल गृह

4.8 धार्मिक जीवन

4.8.1 सकारात्मक पक्ष

4.8.1.1 आस्तिकता

4.8.1.2 पूजा विधि

4.8.1.3 पूजा स्थल

4.8.2 नकारात्मक पक्ष

4.8.2.1 धार्मिक अंधविष्वास

4.8.2.2 धार्मिक आडम्बर

4.8.2.3 धार्मिक स्थल एवं भ्रष्टाचार

पाँचवां अध्याय

05 मेहरून्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में आंचलिकता : आर्थिक और राजनीतिक संदर्भ

5.1 अर्थ

5.1.1 व्युत्पत्तिपरक अर्थ

5.1.2 परिभाषा

5.2 आर्थिक विपन्नता से उत्पन्न समस्याएं

5.2.1 आर्थिक विषमता

5.2.2 निम्न वर्ग और शोषण

5.2.3 गरीबी और दरिद्रता

5.2.4 ऋणग्रस्तता

5.2.5 बंधुआ मजदूर

5.2.6 अर्थ एवं वेष्यावृत्ति

5.2.7 अर्थ एवं सम्बन्ध विघटन

5.3 आंचलिक जीवन और राजनीतिक सन्दर्भ

5.3.1 राजनीति

5.3.1.1 अर्थ

5.3.1.2 परिभाषा

5.3.2 राजनीतिक वातावरण

5.3.2.1 प्रजातन्त्र और पूंजीवाद

5.3.2.2 चुनाव एवं आरक्षण

5.3.2.3 राजनीतिक अज्ञानता

5.3.2.4 चुनावी वातावरण और हिंसा

5.3.2.5 राजनीतिक दाँवपेंच

5.3.2.6 राजनीति एवं जनता विरोध

5.3.2.7 भ्रष्ट न्याय व्यवस्था

छठा अध्याय

06 मेहरून्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में आंचलिकता : प्राकृतिक सन्दर्भ

6.1 प्रकृति

6.1.1 अर्थ

6.1.2 परिभाषा

6.2 बस्तर का भौगोलिक परिदृष्य

6.2.1 नदियाँ

6.2.2 तालाब

6.2.3 कुएं

6.2.4 वन–सम्पदा

6.3 प्रकृति के विविध रूपों का चित्रण

6.4 पशु–पक्षियों का चित्रण

6.5 खेत–खलिहान एवं विविध फसलें

6.6 फूल एवं पेड़–पौधे

6.7 जमीन–मिट्टी की गंध

6.8 प्रकृति एवं दैनिक स्वरूप चित्रण

6.9 प्रकृति के विभिन्न उपकरणों का वर्णन

6.9.1 सूर्य एवं धूप

6.9.2 चाँद एवं चाँदनी

6.9.3 तारे

सातवां अध्याय

07 मेहरून्निसा परवेज़ के कथा साहित्य का षिल्पगत विष्लेषण

7.1 षिल्प

7.1.1 अर्थ

7.1.2 परिभाषा

7.1.3 षिल्प और साहित्य

7.2 षिल्प के विविध तत्व

7.2.1 वस्तु

7.2.1.1 अंचल केंद्रित कथावस्तु

7.2.1.2 अन्तः सूत्रात्मक बिखराव

7.2.1.3 वस्तु संरचना की यथार्थता

7.2.1.4 समस्याओं की बुनावट

7.2.2 चरित्र–चित्रण

7.2.2.1 पात्रों का वर्गगत एवं धर्मगत स्वरूप

7.2.2.2 शोषित–पीड़ित पात्र

7.2.2.3 उग्र–विद्रोही पात्र

7.2.2.4 चरित्र–चित्रण की विभिन्न विधियाँ

7.2.3 वातावरण निर्माण

7.2.3.1 सामाजिक वातावरण

7.2.3.2 सांस्कृतिक वातावरण

7.2.3.3 राजनीतिक वातावरण

7.2.3.4 प्राकृतिक वातावरण

7.2.4 भाषिक संरचना

7.2.4.1 आंचलिक भाषा

7.2.4.2 शब्दों का आंचलिक रूपान्तरण

7.2.4.3 मुहावरे, कहावतें एवं पहेलियां

7.2.4.4 भाषा में ध्वन्यात्मकता एवं प्रतीकात्मकता

7.2.5 शैली

7.2.5.1 वर्णनात्मक शैली

7.2.5.2 चित्रात्मक शैली

7.2.5.3 स्मृति परक शैली

7.2.5.4 लोककथात्मक शैली

उपसंहार

1 मूलग्रन्थ

2 सहायक ग्रन्थ हिन्दी

3 सहायक ग्रन्थ अंग्रेजी

4 शब्दकोष एवं विष्वकोष

4.1 हिन्दी

4.2 अंग्रेजी

5 पत्र–पत्रिकाएं

संदर्भ ग्रंथ सूची

क्र० सं०	रचनाकार	रचना का नाम	प्रकाशन स्थल	संस्करण
	मूल ग्रन्थ			
	उपन्यास			
1.	मेहरून्निसा परवेज़	अकेला पलाष	वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली	2002
2.	मेहरून्निसा परवेज़	आँखों की दहलीज़	प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली	1992
3.	मेहरून्निसा परवेज़	उसका घर	नेशनल पब्लिषिंग हाऊस, नई दिल्ली	1978
4.	मेहरून्निसा परवेज़	कोरज़ा	वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली	1997
5.	मेहरून्निसा परवेज़	पासंग	वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली	2004
6.	मेहरून्निसा परवेज़	समरांगन	वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली	2002
कहानी				
1.	मेहरून्निसा परवेज़	अन्तिम चढ़ाई	राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली	1982
2.	मेहरून्निसा परवेज़	अम्मा	ज्ञान गंगा प्रकाषन, दिल्ली	1997
3.	मेहरून्निसा परवेज़	अयोध्या से वापसी	पंचशील प्रकाशन, जयपुर	1996
4.	मेहरून्निसा परवेज़	आदम और हव्वा	नेशनल पब्लिषिंग हाऊस, नई दिल्ली	1972
5.	मेहरून्निसा परवेज़	एक और सैलाब	आर्य बुक डिपो, दिल्ली	1990
6.	मेहरून्निसा परवेज़	गलत पुरुष	नेशनल पब्लिषिंग हाऊस, दिल्ली	1977

7.	मेहरून्निसा परवेज़	टहनियों पर धूप	वाणी प्रकाषन,नई दिल्ली	1977
8.	मेहरून्निसा परवेज़	ढहता कुतुबमीनार	सत्साहित्य प्रकाषन, दिल्ली	1993
9.	मेहरून्निसा परवेज़	फाल्गुनी	पराग प्रकाषन, नई दिल्ली	1978
10.	मेहरून्निसा परवेज़	मेरी बस्तर की कहानियां	वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली	2006
11.	मेहरून्निसा परवेज़	रिष्ते	आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली	1992
12.	मेहरून्निसा परवेज़	लाल गुलाब	प्रभात प्रकाषन, नई दिल्ली	2006
13.	मेहरून्निसा परवेज़	समर	प्रभात प्रकाषन, नई दिल्ली	1999
14.	मेहरून्निसा परवेज़	सोने का बेसर	सत्साहित्य प्रकाषन, दिल्ली	1991

सहायक ग्रन्थ (हिन्दी)

1.	अंजली तिवारी	फणीष्वरनाथ रेणु का कथा साहित्य	ऋषभचरण जैन एवं संतति, नई दिल्ली	1983
2.	अनीता जाधव	मेहरून्निसा परवेज़की कहानियाँ : एक अध्ययन	चन्द्रलोक प्रकाषन 132, कानपुर	2012
3.	अनीश कुमार	निर्मल वर्मा के साहित्य में समाज और संस्कृति	हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय, षिमला (अप्रकाषित शोध प्रबन्ध)	2009
4.	अमृत लाल नागर	साहित्य और संस्कृति	राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली	1986

5.	अशोक कुमार आलोक	फणीष्वर नाथ रेणु : सृजन और संदर्भ	आधार प्रकाषन, पंचकुला (हरियाणा)	1994
6.	आदर्श सक्सेना	हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों की शिल्प विधि	सूर्य प्रकाशन, बीकानेर	1971
7.	आर० एस० जगताप	मेहरून्निसा परवेज़के कथा साहित्य में नारी	विद्या प्रकाशन, कानपुर	2010
8.	आशारानी ब्होरा	नारी शोषण : आइने और आयाम	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली	1996
9.	इन्दु वीरेन्द्रा	साठोत्तरी कहानी में परिवार	संजय प्रकाशन, दिल्ली	1996
10.	इन्द्रनाथ पाण्डेय	हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में जीवन सत्य	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली	1979
11.	उमा शुक्ल	भारतीय नारी : अस्मिता की पहचान	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद	1994
12.	उमाशंकर श्रीवास्तव	कौटिल्य का अर्थशास्त्र	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	1987
13.	उर्मिला गुप्ता	हिन्दी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योगदान	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	1966
14.	उर्मिला गुप्ता	स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएं	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	1967
15.	एम० एल० गुप्ता	भारतीय सामाजिक समस्याएं	साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा	1962
16.	एस० एस० नन्दा	भारतीय सरकार एवं राजनीति	माड़ेन पब्लिकेशन, रोहतक	1984

17.	ओम शुक्ल	हिन्दी उपन्यास शिल्प विधि का विकास	अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर	1964
18.	कांचन बाहेती रांदड	फणीष्वरनाथ रेणु के कथा साहित्य में आंचलिक तत्व	चन्द्रलोक प्रकाषन, कानपुर	2011
19.	किशोर सिन्हा	हिन्दी की आंचलिक कहानी : परम्परा और प्रयोग	जिज्ञासा प्रकाषन, पटना	2002
20.	कीर्ति मिश्रा	महिला उपन्यास लेखन एवं स्त्री विमर्श	समीक्षा प्रकाशन, इलाहाबाद	2010
21.	कुसुम सोफर	फणीश्वरनाथ रेणु की उपन्यास कला	वसुमती प्रकाशन, इलाहाबाद	1967
22.	गुलाबी देवी	शिवानी के कथा साहित्य में नारी चित्रण	हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय, षिमला (अप्रकाषित शोध प्रबन्ध)	1994
23.	जवाहर सिंह	हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों की शिल्प–विधि	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दरियागंज, नई दिल्ली	1986
24.	डी० बी० के० कलासवा	हिन्दी में आदिवासी जीवन केन्द्रित उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन	मयूर प्रकाशन प्रताप नगर, दिल्ली	2013
25.	दीपा हावगीराज मैलारे	साठोत्तरी हिन्दी कहानियों में पुरूष चरित्र	विकास प्रकाशन, कानपुर	2001

26.	दीपिका रानी	हिन्दी कहानी और मुस्लिम समाज	संजय प्रकाषन, दिल्ली	2009
27.	नीहारे गीते	स्वातंत्र्योत्तर महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में यथार्थ के विभिन्न रूप	पंचशील प्रकाशन, जयपुर	1996
28.	पूर्ण देव एम० ए०	रेणु का आंचलिक कथा साहित्य	आशा प्रकाशन, दिल्ली	1984
29.	प्रकाश वाजपेयी	रेणु के आंचलिक उपन्यास	आशा प्रकाशन, दिल्ली	1984
30.	प्रतीप श्रीधर	स्त्री चिंतन की अन्तर्धाराएं और समकालीन हिन्दी उपन्यास	तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली	2010
31.	प्रीति प्रभा गोयल	भारतीय संस्कृति	पूजा प्रकाशन एवं खन्ना पब्लिशर्ज, दिल्ली	1967
32.	प्रभु दयाल वैश्य	साहित्य और समाज	आत्मा राम एण्ड सन्ज, दिल्ली	1987
33.	बंसीधर	हिन्दी के आंचलिक उपन्यास : सिद्धान्त और समीक्षा	भाषा प्रकाशन, नई दिल्ली	1976
34.	मनोहर नलावडे	मेहरून्निसा परवेज़ का कथा साहित्य	चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर	2008
35.	मन्जु मिश्रा	आदिवासी समाज और संस्कृति	चतुर्वेदी पब्लिकेशन 712, जयपुर	2007
36.	मंजुल गुप्ता	हिन्दी उपन्यास समाज एवं व्यक्ति का द्वंद्व	सूर्य प्रकाशन, दिल्ली	1986

37.	मंजुला राणा	दसवें दशक के हिन्दी उपन्यासों में साम्प्रदायिक सौहार्द	वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली	2008
38.	मंजुलता सिंह	हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग	आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली	1971
39.	महादेव प्रसाद	राजनीति के सिद्धान्त	किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद	1970
40.	माधुरी सोनटक्के	महिला उपन्यासकारों की रचना में चेतना के प्रवाह	विकास प्रकाशन, कानपुर	2010
41.	मीना कुमारी	कमलेष्वर के कथा साहित्य में सामाजिक सम्बन्ध	हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय, षिमला (अप्रकाषित शोध प्रबन्ध)	2008
42.	रमणिका गुप्ता	आदिवासी कौन	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली	2008
43.	रमा नवले	मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2007
44.	रमेश तिवारी	हिन्दी उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन	रचना प्रकाशन, इलाहाबाद	1972
45.	रमेश्वर लाल खण्डेलवाल	कविता में प्रकृति चित्रण	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली	1954
46.	रागिनी शर्मा	फणीश्वर नाथ रेणु और उनका कथा साहित्य	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	2002
47.	राजविलोचन शर्मा	जनजातीय जीवन और संस्कृति	किताबघर प्रकाशन, कानपुर	1967
48.	राधाकृष्ण	धर्म और समाज	राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली	1960

49.	रामकली सराफ	समकालीन हिन्दी कथा लेखिकाएं	अनुराग प्रकाशन, वाराणसी	1977
50	रामदरश मिश्र	हिन्दी के आंचलिक उपन्यास	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	1974
51.	रामपत यादव	उपन्यास का आंचलिक वातायान	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	1980
52.	रेणु शाह	फणीश्वरनाथ रेणु का कथा शिल्प	राजस्थानी ग्रन्थाकार राजस्थान	1991
53.	रेल्फ फॉक्स	उपन्यास और लोक जीवन	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	1969
54.	विजय कुमारी	शिवानी और मृदुला गर्ग के औपन्यासिक नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन	हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय, षिमला (अप्रकाषित शोध प्रबन्ध)	1993
55.	विजयदेव झारी	हिन्दी कहानी में मुस्लिम जीवन और संस्कृति	शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली	1979
56.	विद्या सिन्हा	आंचलिक परिदृश्य : आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2001
57.	विवेकी राय	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन	लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद	1984
58.	वेद प्रकाश अमिताभ	हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में मूल्य–संक्रमण	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	1997
59.	श्याम सिंह	आंचलिकता और राजेन्द्र अवस्थी का कथा साहित्य	हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय, षिमला (अप्रकाषित शोध प्रबन्ध)	2000

60.	शिवतोष दास	भारत की जनजातियां	किताबघर प्रकाषन गांधीनगर, दिल्ली	1983
61.	शील प्रभा वर्मा	महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ	विद्या विहार प्रकाशन, कानपुर	1987
62.	श्रीराम शर्मा	आधुनिक हिन्दी उपन्यास : दार्षनिक चेतना	राजेश प्रकाषन, दिल्ली	2000
63.	श्रीराम शर्मा	धर्मवीर भारती का काव्य : संवेदना और षिल्प	राजेश प्रकाषन, दिल्ली	2001
64.	श्रीराम शर्मा	समकालीन हिन्दी साहित्य विविध विमर्ष	वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली	2009
65.	सीता राम शर्मा	स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	1965
66.	सुरेन्द्र नाथ तिवारी	रेणु के आंचलिक उपन्यास ऐन्द्रिय तत्व	अनुपन प्रकाशन, पटना	1991
67.	सुरेश सिन्हा	हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास	अशोक प्रकाशन, दिल्ली	1972
68.	सुशील शर्मा	हिन्दी उपन्यासों में प्रतीकात्मक शिल्प	सिद्धराम पब्लिकेशन्स शिवाजी पार्क, दिल्ली	1982
69.	सौम मंगल कप्पीकेरे	साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी	विकास प्रकाशन, कानपुर	2000
70.	ह० के०कड़वे	उपन्यासों में आंचलिकता की प्रवृत्ति	अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर	1978

71.	हरिशंकर दुबे	महिला उपन्यासकारों की नारी : प्रगति एवं पीड़ा के आयाम	अमन प्रकाशन, कानपुर	2012

सहायक ग्रन्थ

अंग्रेजी

1.	अमिताभ मुखर्जी	वुमन इन इंडिया लाइफ एण्ड सोसाइटी	इंस्टिट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, कोलकता	1996
2.	एच० एल० शुक्ला	ट्राइबल हैरिटेज ऑफ मध्य प्रदेश	आर० के० पब्लिशिंग कारपोरेशन, दिल्ली	1992
3.	एम० एल० श्रीनिवास	सोशल चेंज इन मॉडर्न इण्डिया	ओरियण्ट लोगमैन प्रा० लि०, न्यू दिल्ली	1977
4.	एस० सी दुबे	इंडियाज चेंजिगविलेजिज	अलाईड पब्लिशर, मुम्बई	1985
5.	कमला देवी	ट्राइबल इन इंडिया	विकास पब्लिशिंग प्रा० लि०, न्यू दिल्ली	1996
6.	प्रोमिला कपूर	मैरिज एंड द वरकिंग वुमन इन इण्डिया	विकास पब्लिशिंग प्रा० लि०, न्यू दिल्ली	1995
7.	मलाडी शुभ्भा	वुमन, ट्रैडिशन एण्ड कल्चर	स्टेरलिंग पब्लिशिंग प्रा० लि०, न्यू दिल्ली	1995
8.	रमेश चौहान	हिमाचल प्रदेष	मिनर्वा बुक हाऊस, षिमला	1998
9.	लियोन इडल	साइक्लॉजिकल नावेल	लिऑस सी–2, लुधियाना	1965
10.	वाई० एस० परमार	पोलैण्ड्री इन द हिमालयाज	विकास पब्लिषिंग हाऊस अंसारी रोड़, दिल्ली–6	1975

शब्दकोश एवं विश्वकोश

(हिन्दी)

1.	कालिका प्रसाद	बृहत् हिन्दी कोश	ज्ञानमण्डल (प्रा० लि०), वाराणसी	1965
2.	गोविन्द चातक	आधुनिक हिन्दी शब्दकोश	तक्षशिला प्रकाशन, इलाहाबाद	1983
3.	धीरेन्द्र वर्मा	हिन्दी साहित्य कोश ज्ञान	ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी	1963
4.	नगेन्द्र नाथ वसु	विश्वकोश	बी० आर० पब्लिशिंग कारपोरेशन, दिल्ली	1919
5.	नवल जी (सं०)	नालंदा विशाल शब्द सागर	आदीश बुक डिपो, दिल्ली	1988
6.	भोलानाथ तिवारी	हिन्दी पर्यायवाची कोश	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली	1994
7.	रामचन्द्र वर्मा (सं०)	मानक हिन्दी कोश	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	1965
8.	शिव राम आमटे	संस्कृत हिन्दी कोश	मोती लाल बनारसीदास, दिल्ली	1965
9.	हरदेव बाहरी	राजपाल हिन्दी शब्दकोश	राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली	1996

शब्दकोश एवं विष्वकोष

(अंग्रेजी)

1.	सत्य प्रकाश, बलभद्र सिंह (सं०)	स्टैंडर्ड इंग्लिश–हिन्दी डिक्शनरी	साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	1983
2.	सुरेश कुमार, रामनाथ सहाय (सं०)	ऑक्सफोर्ड इंग्लिश–हिन्दी डिक्शनरी	ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, दिल्ली	2008

3.	हरदेव बाहरी (सं०)	कम्प्रीहैंसिव इंग्लिश–हिन्दी डिक्शनरी	ज्ञानमण्डल वाराणसी	1969

पत्र–पत्रिकाएं

आजकल	प्रकाशन विभाग पटियाला हाऊस, नई दिल्ली–1
आलोचना	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
कल्पना	कल्पना कार्यालय 516, सुल्तान बाजार हैदराबाद
दिनमान	टाईम्स ऑफ इण्डिया प्रकाशन, बम्बई
धर्मयुग	टाईम्स ऑफ इण्डिया प्रकाशन, बम्बई
मधुमती	साहित्य अकादमी, उदयपुर
समरलोक	शाहपुरा भोपाल
सरस्वती	सरस्वती प्रकाशन, इलाहाबाद

दैनिक पत्र

अमर उजाला	चंडीगढ़
गिरिराज	लोक सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश शिमला–171005
दिव्य हिमाचल	दिव्य हिमाचल प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड सम्पर्क प्रिंटर्स पुराना मटौर–176001 (हि० प्र०)
दैनिक ट्रिब्यून	ट्रिब्यून प्रेस चण्डीगढ़
दैनिक भास्कर	मलिकपुर सरहिन्द, जिला फतेहगढ़ साहिब पंजाब,
पंजाब केसरी	पंजाब केसरी प्रैस, जालन्धर